



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...



रचनाकार :-
सपना परिहार

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - सपना परिहार

हिंदी से परहेज क्यों?



हिंदी से परहेज क्यों?

वर्तमान समय में हमारी शिक्षा व्यवस्था और आम बोलचाल की भाषा में इतना बड़ा अंतर आ गया है कि जब कोई व्यक्ति शुद्ध हिंदी में बात करता है, तो हर जगह उसे आलोचना या उपेक्षा का सामना करना पड़ता—चाहे वह माता-पिता हों, दोस्त हों, आस-पड़ोस के लोग हों या स्वयं हिंदी विषय का शिक्षक।

कॉन्वेंट संस्कृति और रोजगार की बाध्यता

यदि शिक्षा जगत की बात करें, तो आजकल अधिकतर कॉन्वेंट, मिशनरी, सीबीएसई और आईसीएसई बोर्ड के विद्यालयों में हिंदी शिक्षकों के लिए भी अंग्रेजी में बात करना अनिवार्य कर दिया गया है। बिना उनकी राय जाने, प्रबंधन का तर्क होता है कि हमें हिंदी समझ नहीं आती। ऐसे में एक शिक्षक भले ही अध्यापन कला में प्रवीण हो, उसके पास शिक्षण के अनेक कौशल हों, लेकिन केवल अंग्रेजी न बोल पाना उसके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाता है। कई बार पूर्णतः योग्य होने के बावजूद केवल अंग्रेजी के अभाव में अच्छे रोजगार के अवसर हाथ से निकल जाते हैं।

यदि मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवों की बात करूँ, तो लगभग बीस वर्षों से मैं हिंदी का अध्यापन कर रही हूँ। जब किसी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में साक्षात्कार (इंटरव्यू) के लिए जाने पर यह सुनने को मिलता है कि "अंग्रेजी बोलना अनिवार्य है", तो मन को बहुत ठेस पहुँचती है। जब मुझे अंग्रेजी उतनी सहजता से नहीं आती, तो क्या वे लोग पूरे आत्मविश्वास से यह कह सकते हैं कि उन्हें हिंदी नहीं आती? जब मैं हिंदी का ऐसा तिरस्कार देखती हूँ, तो बहुत दुख होता है। क्या हमारी राष्ट्रभाषा इतनी साधारण है कि लोग इसे इतनी सहजता से अनदेखा कर देते हैं? बोलना तो दूर, आजकल लोग हिंदी लिखना भी पसंद नहीं करते।

हिंग्लिश और व्हाट्सएप भाषा का बढ़ता चलन

बच्चों की स्थिति तो और भी हास्यास्पद और चिंताजनक है। जब मैं बच्चों को पढ़ाती हूँ या लिखवाती हूँ, तो वे व्हाट्सएप वाली 'रोमन-हिंदी' (हिंग्लिश) में लिखते हैं। पूछने पर कहते हैं—"मैम, हमें समझ तो आ ही जाता है!" ऐसा लगता है कि हिंदी अब केवल परीक्षा पास करने का एक विषय बनकर रह गई है, व्यावहारिक जीवन से इसका प्रयोग गायब होता जा रहा है। विद्यालयों में यदि कोई शिक्षक हिंदी में बात करता दिख जाए, तो प्रबंधन या समन्वयक (कोऑर्डिनेटर) तुरंत टोक देते हैं—"आप अंग्रेजी में बात कीजिए।" मैं मानती हूँ कि समय के साथ बदलाव आवश्यक है और नई भाषाएँ सीखने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन क्या अंग्रेजी के चक्कर में अपनी मातृभाषा को ही भूल जाना सही है? आज स्थिति यह है कि बच्चों को बताना पड़ता है कि '68' को हिंदी में 'अड़सठ' कहते हैं। बच्चों को हिंदी की गिनती और वर्णमाला तक नहीं आती और अभिभावक बड़े गर्व से कहते हैं—"हमारा बच्चा इंग्लिश मीडियम में पढ़ता है।" जब हिंदी की बात आती है, तो झिझक महसूस करते हैं।

हिंदी शिक्षक की उपेक्षा और वास्तविक मूल्यांकन

कई बार साक्षात्कार में केवल अंग्रेजी न बोल पाने के कारण मुझे अस्वीकार कर दिया गया। मैंने शिक्षा को कभी केवल 'रोजगार' की दृष्टि से नहीं देखा; मुझे पढ़ाना प्रिय है। एक शिक्षक के रूप में मेरा दायित्व है कि मैं बच्चों को हिंदी भाषा का सम्यक ज्ञान दूँ। लेकिन यदि मुझे 'नैतिकता' या 'स्वतंत्रता' जैसे शब्दों को भी अंग्रेजी में अनुवाद करके समझाना पड़े, तो यह भाषा की मूल आत्मा के साथ अन्याय है।

लोग प्रायः कह देते हैं—"हिंदी तो कोई भी पढ़ा लेगा, इसमें क्या है!" ऊपर से देखने पर लगता है कि कोई भी किताब उठाकर पढ़ा देगा, लेकिन क्या वह बच्चों के साथ न्याय कर पाता है? क्या वह भाषा की बारीक व्याकरणिक संरचना, मात्राओं का ज्ञान और शब्दकोश की विशालता को समझा पाता है? हिंदी का शब्दकोश इतना समृद्ध और विशाल है कि आप अध्ययन करते-करते थक जाएँगे, पर साहित्य कभी समाप्त नहीं होगा।

इसके बावजूद, एक हिंदी शिक्षक को वह श्रेय और सम्मान नहीं मिलता जिसका वह हकदार है। आर्थिक दृष्टि से भी देखें तो गैर-सरकारी विद्यालयों में एक सामान्य हिंदी शिक्षक 10 से 20 हजार के सीमित वेतन पर कार्य करने को मजबूर है। छोटी जगहों पर तो नाममात्र के वेतन में 'काम चलाऊ' शिक्षक रख लिए जाते हैं।

समाज की मानसिकता और हमारी विडंबना

आज के समाज में यदि कोई व्यक्ति हिंदी में बात करता है, तो लोग उसे कम पढ़ा-लिखा या पिछड़ा समझने लगते हैं, भले ही उसके पास बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हों। अंग्रेजी का प्रभाव हमारे रहन-सहन और परिवेश पर इतना हावी हो चुका है कि हिंदी बोलने वाले को लोग ऐसे देखते हैं जैसे वह किसी दूसरे ग्रह से आया हो। यह हमारे देश की सबसे बड़ी विडंबना है कि हम आधुनिकता की दौड़ में आगे तो बढ़ रहे हैं, लेकिन अपनी जड़ों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। वर्ष में एक बार 'हिंदी पखवाड़ा' या 'हिंदी दिवस' मनाकर, कुछ गोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित कर हम अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं और पुनः अगले साल तक के लिए निश्चिंत हो जाते हैं।



***** निष्कर्ष *****

हिंदी कोई 'टाइमपास' का जरिया नहीं है। यह भाषा इतनी सरल या सस्ती नहीं है कि इसे हलके में लिया जाए। यह हमारी मातृभाषा है, हमारी पहचान, हमारा सम्मान और हमारा अभिमान है। इसलिए हिंदी भाषा और हिंदी शिक्षकों को कभी कमतर आंकने की भूल न करें।

- सपना परिहार



लेखक परिचय

नाम – सपना परिहार
ग्राम - नागदा, मध्यप्रदेश





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....सपना परिहार.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए समसामयिक विषय पर अपने विचारों को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की ओर से यह सम्मान-पत्र सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

